लोक-सभा वाद-विवाद

(भाग २—प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही)

खंड ८— १९५४

(१५ नवम्बर से ३ दिसम्बर, १९५४)

1st Lok Sabha

सत्यमेव जयते

Preservation Unit
Fumigated
On 11.11.83
Parliament Library

अष्टम सत्र, १९५४

(खण्ड ८ में अंक १ से अंक १५ तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय,

नई दिल्ली

लोक-सभा वाद-विवाद

(भाग २—प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही)

खण्ड '८ भारत की प्रथम संसद् के आठवें सत्र का पहला दिन अंक १

लोक-सभा

सोमवार, १५ नवम्बर, १९५४

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय (श्री जी० वी० मावलंकर) पीठासीन हुये]

प्रश्नोत्तर

(प्रश्न नहीं पूछे गये—भाग १ प्रकाशित नहीं हुआ)

श्री रफी अहमद किदवई तथा श्री वी० नाडिमुत्तु पिल्ले का निधन

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य एवं रक्षा मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू): अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं इस सत्र के प्रारम्भ में ही, कुछ दिनों पहले की दुःखद तथा शोकप्रद घटना का उल्लेख करना चाहता हूं । श्री रफी अहमद किदवई के देहावसान का समाचार जब मेरे पास पहुंचा तो मैं भारत से बहुत दूर स्थान पर था और तब मुझे उस लम्बे सम्पर्क का स्मरण हो आया जो हम में से बहुत से लोगों का उनके साथ रहा था । इस सभा में यहां कदाचित ही कोई ऐसा व्यक्ति उपस्थित हो जिसका उनसे इतने लम्बे समय तक घनिष्ट सम्पर्क रहा हो जितना कि मेरा । परन्तु यहां ऐसे अनेक सदस्य हैं जिनका उनसे अनेक वर्षों तक सम्बन्ध रहा है और इस सभा के प्रत्येक सभासद का उनसे किसी न किसी रूप में सम्पर्क था, चाहे सभा के कार्य के विषय में या बाहर । अतः मुझे इस लम्बे काल का स्मरण हो आया जब कि लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व महाविद्यालय से निकलते ही वह हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े थे । उस समय से आज तक मेरे विचार में उन्होंने कभी भी कोई और बात सोची ही नहीं और इस आन्दोलन के विविध पहलुओं पर ही और फिर उसके बाद की घटनाओं पर ही उनका ध्यान केन्द्रित रहा । मैं ने ऐसा कोई अन्य व्यक्ति नहीं देखा जिसे रफी अहमद के समान एक ही ध्येय के लिये इतनी लगन रही हो । हां, वह मुसलमान तो अवश्य थे, फिर भी मुझे ऐसे किसी व्यक्ति का ज्ञान नहीं है जो अपने आचार-विचारों में इतना पूर्ण भारतीय हो जितने रफी अहमद थे और जो किसी जाति तक सीमित न हो ।

उन्हें हम सभी जानते हैं और इसलिये कुछ अधिक कहना आवश्यक नहीं है । वह महान जन्म से नहीं थे, और न महानता उन पर थोपी ही गई थी । उन्होंने निरन्तर कठोर परिश्रम से और ऐसे प्रकार के कार्य से, हम में से अधिकांश प्रायः नहीं करते हैं, उस महानता को प्राप्त किया था । मुझे याद है कि कई वर्षों तक जब कि हम लोग देहातों में घूम फिर कर भाषण दिया करते थे उस

समय रफी अहमद कभी सार्वजनिक रूप से भाषण नहीं देते थे । इस विषय में हम लोगों में मज़ाक़ सा रहता था । वह चुपचाप कार्य करने वाले व्यक्ति थे । सार्वजनिक सभाओं में भाषण देना उन्हें सदा नापसन्द-सा था । वह असार्वजनिक बैठकों में काफी बोलते थे परन्तु सार्वजनिक सभाओं में नहीं बोलते थे । और इस प्रकार वह चुपचाप संगठन-कार्य करते थे, मौन रह कर कार्य करते थे और भारत में सहयोगी, मित्र तथा साथी के रूप में वह जितने लोगों से परिचित थे मेरी जानकारी में उतने लोगों से शायद ही कोई और हो । जब वह यहां थे या अन्यत्र थे तब उनके घर पर सहायता के लिये असंख्य व्यक्ति आया करते थे । ऐसे किसी व्यक्ति का मुझे पता नहीं है जो उनके घर से निराश लौटा हो । जो भी आया उन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार और सामर्थ्य से अधिक भी उसकी सहायता की और जो शोकग्रस्त था उसे सान्त्वना दी । अब यदि आप उन के गांव मसौली जायें तो आपको एक जर्जर मकान मिलेगा, एक खंडहर, जिसके एक भाग पर तो छत ही नहीं है । ऐसा वह मकान है जिसमें वह इतने वर्षों तक रहे और उसकी मरम्मत करवाने के लिये और जहां छत न हो वहां छत डलवाने के लिये उनके पास न कभी समय था और न पैसा, क्योंकि उनका तन मन धन अन्य बातों में ही लगा रहता था ।

सभा को पता है कि कभी कभी वह लोगों को बहुत खिझा देते थे । वह कभी कभी मैत्रीपूर्ण ढंग से दूसरे पक्ष को खिझाने के लिये कई बातें कहने में आनन्द सा अनुभव करते थे । फिर भी मैं ने उन में किसी के प्रति वैमनस्य की भावना कभी भी नहीं पाई ।

इस प्रकार वह एक विलक्षण व्यक्ति थे जैसे प्रायः विरले ही होते हैं । उनसे योग्यतर व्यक्ति मिल सकते हैं, ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन्हें राष्ट्रीय कार्यों के लिये बहुत लगन है । इन सब बातों को मापना कठिन है । परन्तु रफी अहमद में इन सब बातों का विचित्र सम्मिश्रिण था जो निस्सन्देह बहुत कम मिलता है । और इसी कारण उनके चले जाने से एक अभाव उत्पन्न हो गया है जो कदाचित् ही पूरा हो सके ।

सरकार को और सरकार में उनके सहयोगियों को और अन्य असंख्य व्यक्तियों को उनकी मृत्यु से भारी आघात पहुंचा है । और मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि अन्तिम क्षण तक कार्य करते हुये उन्हें जैसी मृत्यु प्राप्त हुई है उस से हम में से कई को स्पर्धा हो सकती है । जब उनकी देहावसान हुआ तब मैं तो यहां था नहीं, परन्तु मैं ने सुना है कि दिल्ली की जनता ने, देश के अन्य भागों की जनता ने भी, परन्तु विशेषतः दिल्ली के लोगों ने, चाहे वे किसी वर्ग, सम्प्रदाय, विचारधारा और दल के हों, सभी ने इतना शोक तथा दुःख प्रकट किया जितना बहुत ही कम अवसरों पर दिल्ली में देखने को मिला है । इसका कारण आखिरकार यही था कि रफी अहमद के लिये जनता के हृदय में स्थान था और वह जनता की सेवा करते थे । वही वास्तविक श्रद्धांजलि थी जो जनता ने उन्हें अर्पित की, मेरे ये कुछ शब्द नहीं जो मैं यहां सभा में कह रहा हूं ।

निस्सन्देह, मैं यह सभा की इच्छा ही व्यक्त कर रहा हूं जब मैं यह कहता हूं कि, श्रीमान्, आप उनकी मृत्यु पर हमारी गहरी समवेदना उनके परिवार के सदस्यों को पहुंचा दें ।

अध्यक्ष महोदय : सभा के माननीय नेता ने जो कुछ कहा है उसमें मैं पूर्णरूप से उनके

साथ हूं यह हमारी राष्ट्रीय क्षति है और इसकी गहराई को मापना असम्भव है । श्री किदवई एक योग्य प्रशासक थे और दृढ़ता तथा कर्मठता से कार्य करते थे । उन्होंने जिस प्रकार खाद्य की जटिल समस्या का समुचित समाधान करके देश को एक बड़ी भारी, चिन्ता से मुक्त किया उससे हम सब परिचित हैं । मुझे विश्वास है कि उनके परिवार को इस शोक में हमारी समवेदना भेजने में सभा मेरे साथ है ।

मुझे सभा को यह भी बतना है कि एक अन्य सदस्य, श्री नाडिमुत्तु पिल्ले का भी देहान्त हो गया है जो अन्तर्कालीन संसद् के सदस्य थे । उनका निधन २६ अक्तूबर, १९५४ को ५२ वर्ष की आयु में उनके निवास-स्थान पर पुडुकोट्टे में हुआ था । वह तामिल नाड कांग्रेस समिति तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य थे और १९४०-४१ में कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेने पर उन्हें कारा-वास भी भोगना पड़ा था । वह मद्रास की विधान सभा के भी सदस्य थे ।

हम इन दोनों मित्रों के निधन पर शोक प्रकट करते हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके परिवारों को समवेदना भेजने में सभा मेरे साथ है । शोक प्रकट करने के लिये सभा-सद एक मिनट के लिये मौनवत् खड़े रहें ।

अब सभा दिवंगतों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये स्थगित होती है ।

इसके पश्चात् लोक-सभा मंगलवार, १६ नवम्बर, १९५४ के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई ।